अध्याय 20

अ. कथक का इतिहास
ब. जयपुर व लखनऊ घराने का तुलनात्मक अध्ययन

अ. कथक का इतिहास

हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति के संयुक्त प्रभाव युक्त तथा हिन्दुस्तानी संगीत पर आधारित, उत्तर भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली 'कथक' है। कथक के विद्यार्थियों हेतु इसकी एतिहासिकता को जानना आवश्यक है। प्राचीन काल में नट, नर्तक, कुशीलव आदि नाम संगीत आधारित अभिनय अथवा नृत्यकार हेतु प्रयुक्त होते थे। ब्रह्मपुराण, महाभारत, नाट्यशास्त्र में कथा आधारित नृत्य करने वाले के लिये 'कथक' शब्द प्रयुक्त किया गया है। संगीत रत्नाकर (13 वीं सदी) के नृत्याध्याय में –

कथका बन्दिनश्चात्र विद्यावन्तः प्रियम्बघः ।
प्रशंसाकुशलाश्चान्ये चतुरा सर्वमातुषु।।

'कथक' अर्थात् हाव–भाव द्वारा कथा कहने वाला', स्वयं कथा कहकर नृत्य करना। नृत्य के मूल तत्वों के जानकार कथक नृत्यकार, कृष्ण लीलाओं का नृत्य प्रधान 'नाट्य' किया करते थे तथा अपनी आजीविका चलाते थे। संगीत दर्पण, संगीत मकरंद आदि ग्रंथों में भी कथक संबंधी पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है। 'कथा कहें सो कथक कहावे'। 'कथक' शब्द द्वारा एक जाति व नृत्य शैली दोनों के प्रमाण प्राप्त होते हैं। मुगलकाल में ईश्वर आराधन में प्रयुक्त भारतीय कलाएँ, दरबार में मनोरंजन हेतु भी प्रयुक्त हुई। मुगल बादशाहों द्वारा प्रशिक्षकों की नियुक्ति करवाकर प्रशिक्षण दिलवाया जाता था। 17 वीं सदी के अनेकों चित्र दरबारों में नृत्य प्रदर्शन करते दर्शाते हैं कि ये प्रस्तुतियाँ मूलतः 'कथक' ही हैं, अन्य किसी भी शैली से इनका साम्य नहीं है।

सोलहवीं शताब्दी में रीतिकाल के कवि – सूरदास, कृष्णदास, परमानंद दास, छीतस्वामी आदि कवियों की रचनाओं में विशुद्ध रूप से कथक नृत्य के बोलों का प्रयोग दिखाई देता है –

बाजत मृंदग उघटत सुधंग तक्कु जिन, कुकुजिन......। कृष्णदास

गिड़गिड़ता, गिड़ गिड़वा, तत् तत् थेई थेई गति तीनों...। छीत स्वामी

कथक के प्रमुख आश्रयदाताओं में नवाब वाजिद अली शाह (लखनऊ), महाराज सवाई जयसिंह, सवाई रामसिंह द्वितीय, सवाई माधोसिंह (जयपुर) तथा राजा चक्रधर सिंह (रायगढ़) के नाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

नवाब वाजिद अली शाह

नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में नृत्य व संगीत को अभूतपूर्व आश्रय प्राप्त हुआ। उनके 'रहस–खाने' में कृष्ण की लीलाओं पर आधारित नृत्य व रास मंडल आयोजित होते थे वाजिद अली शाह को संगीत की प्रत्येक विद्या पर अभिरूचि व गहन पकड़ थी। प्रत्येक कला के विशेषज्ञ, विद्वानों को उनका आश्रय प्राप्त था। ठाकुर प्रसाद जी उनके नृत्य गुरू थे। वे स्वयं रास मंडली में कृष्ण बनकर नृत्य करते थे। लेकिन इस काल में दरबारी संस्कृति द्वारा संगीत का विलासपूर्ण व मनोरंजक स्वरूप अधिक मुखर हुआ। तथा भारतीय मोक्ष मार्गी व आध्यात्मिक स्वरूप का

ह्रास हुआ।

वाजिद अली शाह ने स्वयं अनेक गतों की रचना की, जिनका उल्लेख उनकी पुस्तक 'बन्नी' में है। कथक में ठुमरी का उपयोग व विकास भी वाजिद अली शाह के काल की ही देन है। कथक की शैलीगत विशेषताएँ जिनमें – सलामी, आमद, ठाठ, तोड़े, गत आदि का स्थायीकरण व विकास इसी युग की देन है।

नृत्य गुरू ठाकुर प्रसाद

धीरे–धीरे दरबारों में नृत्य का चलन बढ़ने लगा। लखनऊ, बनारस, रायगढ़, जयपुर, टोंक, बीकानेर, चुरू आदि अनेक स्थानों पर कथक को आश्रय मिला, लेकिन लखनऊ तथा बिंदादीन जी के परिवार का महत्व शिक्षण, प्रशिक्षण व प्रदर्शन में बना रहा। इसी क्रम में घरानों का अस्तित्व उभरने लगा। एक ओर नवाबों के आश्रय में लखनऊ घराना अपनी श्रृंगारिकता, नाजुकता, से ओतप्रोत रहा वहीं जयपुर राजदरबार के संरक्षण में जयपुर शैली का विकास अपने ओज व भक्तिपूर्ण समन्वय को दर्शाता है। इनके ही प्रभाव से बनारस व रायगढ़ शैलियों का अस्तित्व विकसित हुआ, लेकिन कथक नृत्यकारों के लिए लखनऊ एक पवित्र तीर्थ की तरह तथा बिंदादीन महाराज साक्षात कृष्ण के स्वरूप एवं महागुरू के रूप में मान्य रहे हैं।

राजा चक्रधर सिंह

राजा चक्रधर सिंह (1924–1947) – कथक नृत्य के विकास तथा प्राश्रय में रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कथक की रायगढ़ शैली के संस्थापक स्वयं राजा चक्रधर सिंह थे। अनेक उच्च संगीतकार, जयपुर व लखनऊ घराने के नृत्यकार इनके दरबार में थे। समस्त शैलियों का अध्ययन कर इन्होंने कथक की रायगढ़ शैली को विकसित किया। नृत्य प्रस्तुति हेतु उन्होंने अनेकों गत, तोड़ा, ठुमरी, गजल आदि की रचना की। नृत्य प्रस्तुति के दौरान वे स्वयं तबला, पखावज वादन करते थे। 1939 में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में उन्हें 'संगीत सम्राट' उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने नृत्य व संगीत संबंधी लगभग 15 पुस्तकें लिखीं। रायगढ़ में उनकी स्मृति में "राजा चक्रधर सिंह संगीत अकादमी " संचालित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद – भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय आकाशवाणी, दूरदर्शन द्वारा कलाओं का प्रसार किया गया तथा अनेकों कार्यक्रम, योजनाओं पर पहल की गई। इस क्रम में संगीत नाटक अकादमी द्वारा 'कथक केन्द्रों' की स्थापना विद्यालयी व विश्वविद्यालयी शिक्षा में कथक नृत्य शिक्षा का प्रारंभ छात्रवृत्तियां, सांस्कृतिक समारोह, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक दलों में कथक, कलाकारों को अवसर तथा राष्ट्रीय पुरस्कारों द्वारा कलाकारों को प्रोत्साहन देकर कथक नृत्य को नई दिशा प्रदान की गई है। इस कड़ी में स्पिक मैके के प्रयास भी अत्यंत सराहनीय हैं। आज तकनीक, मीडिया व विज्ञान के सहयोग से इस कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त हुई है। एकल, युगल व समूह प्रदर्शनों में अभिनव कथानक व प्रयोग देखे जा रहे हैं।

प्रख्यात नृत्य गुरू शम्भू महाराज इसे 'नटवरी नृत्य' ही कहते थे तथा कथक नामकरण के भी विरोधी थे। कथक नृत्य की प्राचीनता व एतिहासिकता को हम कैसे भी निर्धारित करें लेकिन इसके वर्तमान स्वरूप का अस्तित्व हमें दो–ढ़ाई सौ वर्ष पुराना ही दिखाई देता है। कथक के घरानों की चर्चा में अधिकांश अन्य नृत्याचार्यों की मूल शिक्षा भी लखनऊ में ही दिखाई देती है। तथा लखनऊ घराने का नृत्य या बिंदादीन परिवार का नृत्य एक ही दिखाई देता हे। जयपुर घराना भी मुख्यतः 5 परिवारों – नायक नाथूलाल, गिरधारीलाल, शंकरलाल, गिरधारी जी, पूर्णराम का ही केन्द्र रहा है।

बिंदादीन महाराज

लखनऊ घराने के प्रमुख कलाकार– बिंदादीन महाराज, कालका प्रसाद, अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, शंभू महाराज, बिरजू महाराज।

जयपुर घराने के प्रमुख कलाकार– हरिहर प्रसाद व हनुमान प्रसाद, पं. जयलाल, पं. नारायण प्रसाद, पं. सुंदरप्रसाद, पं कुंदनलाल गंगानी, सुंदर लाल गंगानी, चरण गिरधर चाँद, पं. राजेन्द्र गंगानी है।

बनारस घराने के कलाकार– पं. जानकी प्रसाद, पं. सुखदेव मिश्र, सितारा देवी, गोपीकृष्ण, सुनयना हजारी लाल हैं।

रायगढ़ घराने के कलाकार– कार्तिकराम, कल्याणदास, फिरतू महाराज, मुकुल राम, रामलाल के नाम उल्लेखनीय हैं।

सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों की तरह नृत्य के मूल तत्त्वों – हाव–भाव, अभिनय, मुद्रा, रस आदि का प्रयोग नाट्यशास्त्र व

अभिनयदर्पण में वर्णित विधान के अनुसार ही कथक नृत्य में किया जाता है। लेकिन कथक नृत्य की अपनी निजी शैलीगत विशेषताओं का दर्शन अन्य शैलियों से स्वतंत्र है। कथक के नृत्त अंग में – ठाठ, आमद, तोड़ा, सलामी, तत्कार, उठान, प्रमेलु आदि अंग हैं। नृत्य प्रस्तुति के दौरान जिन कथानकों का प्रयोग किया जाता है उनमें – कृष्णलीला, कालिय दमन, बाल लीला, गोवर्द्धन लीला, पूतना वध, पनघट, महारास, माखन चोरी, सुदामा चरित्र, मीरां के गिरधर अहिल्या उद्धार, गज व ग्राह, दशावतार, चीरहरण, शबरी, शिव तांडव आदि की प्रस्तुति की जाती है।

कत्थक के नृत्य अंग में– गत विकास, गत् भाव, वंदना, कवित्त आदि हैं। विशुद्ध रूप से उत्तर भारतीय संगीत के प्रयोग पर आधारित यह एकमात्र नृत्य शैली है। उत्तर भारतीय संगीत की गायन शैली – ध्रुपद, धमार, ठुमरी, गजल, भजन, चतुरंग, तराना का प्रयोग, राग, ताल, स्वरलिपि व वाद्यों आदि का प्रयोग इसे संपूर्ण उत्तर व मध्य भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली का दर्जा देता है।

ब. जयपुर व लखनऊ घराने का तुलनात्मक अध्ययन

घराने का अर्थ है परम्परा, शैली, सम्प्रदाय, पंथ, आचार आदि। जब हम किसी घराने की बात करते हैं तो किसी विशिष्ट परम्परा अथवा शैली (Style) को इंगित करते हैं। प्रत्येक घराने में कोई भिन्नता, विशेषता व अनोखापन होता है, जो कि उस घराने का प्रतीक मानी जाती है। घराना स्थापित होने में एक अरसा गुजर जाता है। भारत में वैदिक काल से नृत्य का वर्णन मिलता है।

नृत्य का स्वरूप कब से कथक कहलाने लगा यह कहना कठिन है, कथक सम्पूर्ण उत्तर भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में विकसित हुआ।मुगलकाल में जब यह नृत्य कला मंदिरों से निकलकर राजदरबारों की शोभा बढ़ाने लगी तो एक ओर हिन्दु राजाओं का आश्रय मिला तथा दूसरी ओर मुगल दरबारों का, एक ओर सात्विक अभिनय, ओज एवं तैयारी प्रदर्शित करने वाला कथक, दुसरी ओर लखनऊ के नवाबों की नजाकत, अदाओं एवं विलासिता दर्शाने वाला कथक। कला के विभिन्न क्षेत्र गायन, वादन, नर्त्तन आदि में स्थान अथवा कलाकार विशेष के नाम से शैलियाँ अथवा घराने प्रचलित होने लगे, जैसे गायन में ग्वालियर घराना, पटियाला घराना, डागर घराना, अल्लादियां खाँ घराना, जानकी प्रसाद घराना आदि। इसी प्रकार कथक नृत्य में अनेक घराने पनपने लगे। जैसे – जयपुर घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना, रायगढ़ घराना आदि।

कथक के मुख्य तीन घराने माने जाते हैं – (1) जयपुर घराना। (2) लखनऊ घराना। (3) बनारस घराना।

जयपुर घराना

हिन्दु राज दरबारों में कथक की जिस शैली का विकास हुआ उसे जयपुर घराना नाम दिया गया। (जयपुर के राजा महाराजाओं ने संगीत एवं नृत्य के श्रृंगारिक पक्ष के साथ शास्त्रीय एवं भक्ति पक्ष को भी महत्त्व दिया।) महाराजा सवाई जय सिंह ने जयपुर में विभिन्न विधाओं के 36 केन्द्र स्थापित किये। यहाँ पर ख्याति प्राप्त कलाकारों को प्रश्रय व प्रोत्साहन दिया जाता। सवाई रामसिंह द्वितीय व माधोसिंह द्वितीय के काल में उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। यहाँ के कलाकार देश में 'जयपुर' घराने के नाम से पहचाने जाने लगे। जयपुर घराने के प्रथम प्रवर्त्तक भानूजी थे। इन्होंने शिव–ताण्डव की शिक्षा प्राप्त की। इनके पुत्र व पौत्रों को जिनके नाम मालू जी, कानू जी, लालू जी थे, शिव–ताण्डव की शिक्षा परम्परा से प्राप्त थी।

हरिप्रसाद तथा हनुमान प्रसाद की जोड़ी देवपरी की जोडी के नाम से प्रसिद्ध थी। हरिप्रसाद की आकाशचारी तथा चक्करदार परने और हनुमान प्रसाद का लास्य प्रधान नृत्य विशिष्ठ था। इनके कुछ जातिए भाई इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार थे। जिनमें श्यामलाल, चुन्नीलाल, दुर्गाप्रसाद, गोवर्द्धनजी, जयलाल और सुन्दर प्रसाद, नारायणराम, रमनलाल, अनोखेलाल, लक्ष्मणप्रसाद थे।

लखनऊ घराना

मुगल दरबारों में कथक नृत्य के जिस स्वरूप को प्रोत्साहन व आश्रय मिला उसे लखनऊ घराने के नाम से जाना जाने लगा। बादशाह अकबर से लेकर अंतिम मुगल शासक तक कथक को प्रोत्साहन मिला। कथक नृत्य के सर्वांगीण विकास एवं उन्नति के शिखर तक ले जाने का श्रय लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह को जाता हैं। इन्होने स्वयं नृत्य की शिक्षा प्राप्त की तथा कई पुस्तकें लिखी। ईश्वरीप्रसाद जी को लखनऊ घराने का जन्म दाता माना जाता हैं। ठाकुरप्रसाद जी वाजिद अली शाह के गुरू थे। इनकों गुरू दक्षिणा में 6 पालकी भरकर रूपए दिए गए। बिन्दादीन जी ने पन्द्रह सौ ठुमरियों की रचना की। दरबारी वातावरण में रहकर भी इन्होने अपना सात्विक जीवन स्थित रखा। छोटे भाई कालका प्रसाद के साथ मिलकर कालका बिन्दादीन नाम की ख्याति देशभर में रही। कालका प्रसाद के तीन पुत्र अच्छन महाराज, लच्छु महाराज एवं शंभु महाराज थे। अच्छन महाराज कठिन तालों से बड़ी सुगमता से नृत्य करते थे। अच्छन महाराज के पुत्र बिरजू महाराज वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार हैं।

	जयपुर घराना	लखनऊ घराना
1.	हिन्दु राज दरबारों में कथक के जिस स्वरूप का विकास हुआ, उस शैली को जयपुर घराने का नाम दिया गया।	मुगल शासकों के दरबार में कथक नृत्य के जिस स्वरूप का विकास हुआ उस शैली (स्वरूप) को लखनऊ घराने के नाम से जाना जाता हैं।
2.	राजपूती प्रभाव होने के कारण ओजपूर्ण व वीर रस से ओतप्रोत हैं। हाथों को पूरा फैलाकर एवं पैरो से दमदार आघात किया जाता हैं। अतः जोश व आवेश से परिपूर्ण हैं।	मुस्लिम प्रभाव होने से इस शैली में नजाकत व खूबसूरती पर बल दिया जाता हैं। अंगों के संचालन में गोलाइयाँ, त्रिभंग और सौन्दर्ययुक्त भंगिमाओं का प्रयोग किया जाता हैं।
3.	राजस्थान के शासकों की धार्मिक वृत्ति ा होने के कारण इस शैली में भक्ति रस की एक धारा है। देवी–देवताओं की स्तुति से नृत्य का आरम्भ नमस्कार से होता है।	बादशाहों एवं नवाबों के समक्ष नृत्य प्रारम्भ करने से पूर्व झुककर सलाम करने का अंदाज पेश किया जाता हैं। ''सलामी'' इस घराने की देन है।
4.	सात्विक श्रृंगार, भक्ति, एवं करूण रस जयपुर घराने की परम्परा है।	श्रृंगार, सौन्दर्य, सरलता, नाजुकता का प्रदर्शन लखनऊ घराने की प्रमुख विशेषता हैं।
5.	कठिन लयकारी, तत्कार व अप्रचलित तालों में नृत्य प्रस्तुति इस घराने में प्रमुखता से प्रस्तुत की जाती हैं।	गत निकास व गत भ ाव का प्रदर्शन लखनऊ घराने की प्रमुख विशेषता हैं।
6.	ठाठ प्रस्तुति में दांये पैर का प्रयोग होता है।	बाँये पैर पर नर्त्तक खड़ा होता है।
7.	आमद में ''त्राम'' बोल का प्रयोग हैं।	आमद में ध, त, क, थुंगा, बोलो का प्रयोग होता है।
8.	चक्कर लेने में अधिकतर 'तिग धा दिग दिग थेई' के बोलो का प्रयोग होता है।	तत्, तत् थेई बोलो का प्रयोग होता है।
9.	एक पाद चक्कर आकाश भ्रमरी आदि चमत्कारिक प्रस्तुति की जाती हैं।	नजाकत, नफासत युक्त श्रृंगारिक प्रस्तुति इस शैली का गुण हैं।
10.	भजन व पौराणिक गाथा युक्त गीतों पर भाव प्रदर्शन किया जाता है।	ठुमरी, गजल द्वारा भाव प्रदर्शन किया भाव प्रदर्शन किया जाता है।
11.	पखावज के बोल पर पूरे पैर का प्रयोग होता है।	तबले पर नटवरी के बोल जिसमें एडी का प्रयोग किया जाता है।
12.	पंडित जयला ल, सुन्दर प्रसाद, कुन्दनलाल गंगानी नारायण प्रसाद, राजेन्द्र गंगानी इस शैली के प्रमुख नृत्याचार्य है।	बिन्दादीन महाराज, अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, शंभु महाराज, बिरजू महाराज प्रमुख नृत्याचार्य है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु–

- दक्षिण व पूर्वोत्तर भारत को छोड़कर शेष भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली 'कथक' है।
- कथक में हिन्दु व मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय दृष्टिगत होता है। अदा, सलामी, आमद, ठाठ आदि इसके साक्ष्य है।
- कथक की एतिहासिकता के प्रमाण–ब्रह्म पुराण, महाभारत, नाट्यशास्त्र व संगीत रत्नाकर से प्राप्त होते हैं।
- कथक के विकास, शैलीगत संरचना, प्रचार–प्रसार, शिक्षण व प्रदर्शन में कालका बिंदादीन महाराज के परिवार का अतुलनीय योगदान है।
- मध्यकालीन राज दरबारों से प्राप्त नृत्य के चित्र, रीतिकालीन कवियों की रचनाओं से प्राप्त नृत्य शब्दावली युक्त पद, कथक शैली के महत्त्वपूर्ण साक्ष्य है।
- राजदरबारों द्वारा प्राप्त आश्रय के कारण कथक के कृष्ण व रासमयी स्वरूप के साथ श्रृंगार, नाजुकता तथा दरबारी संस्कृति व वेशभूषा का समागम हुआ।
- नवाब वाजिद अली शाह, राजा चक्रधर सिंह व जयपुर नरेशों ने कथक के विकास व आश्रय में अमूल्य योगदान दिया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार के संस्थानों–संगीत नाटक अकादमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विद्यालयों व विश्वविद्यालयी शिक्षा ने कथक नृत्य शैली को नए आयाम दिए।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. कथका बन्दिनश्चात्र........" कथन उद्यृत है –

   (अ) संगीत रत्नाकर (ब) नाट्यशास्त्र (स) अभिनयदर्पण (द) बृहद्देशी

2. नवाब वाजिद अली शाह के नृत्य गुरू कौन थे ?

   (अ) बिंदादीन महाराज (ब) अच्छन महाराज (स) ठाकुर प्रसाद (द) पं. जयलाल

3. जयपुर कथक घराना की कितनी प्रमुख शाखाएँ हैं?

   (अ) पाँच (ब) तीन (स) सात (द) एक

4. कथक केन्द्र की स्थापना किसके द्वारा की गई है।

   (अ) संगीत संकल्प (ब) स्पिक मैके
   (स) सांस्कृतिक संबंध परिषद (द) संगीत नाटक अकादमी

5. कथक नृत्य में प्रयुक्त संगीत हैं ?

   (अ) कर्नाटक संगीत (ब) हिन्दुस्तानी संगीत
   (स) रविन्द्र संगीत (द) नजरूल संगीत

6. देवपरी की जोड़ी के नाम से प्रसिद्ध नृत्यकार थे

   (अ) पं० हरिप्रसाद हनुमानप्रसाद (ब) शम्भू महाराज, लच्छू महाराज
   (स) अड़गू जी खड़गू जी (द) पं० सुन्दर प्रसाद, जयलाल

7. कठिन लयकारी व अप्रचलित तालों में नृत्य प्रस्तुति किस घराने की विशेषता है –

   (अ) लखनऊ (ब) जयपुर (स) बनारस (द) रायगढ़

8. नजाकत व नटवरी के बोल किस घराने का गुण है –

(अ) बनारस (ब) जयपुर (स) लखनऊ (द) रायगढ़

उत्तरमाला– (1) अ (2) स (3) अ (4) द (5) ब (6) अ (7) ब (8) स

लघुउत्तर प्रश्न

1. कथक नृत्य के विकास में नवाब वाजिद अलीशाह के योगदान को समझाइये।
2. राजा चक्रधर सिंह ने किस प्रकार कथक नृत्य शैली को सहयोग प्रदान किया।
3. कथक के प्रमुख घरानों के दो–दो कलाकारों के नाम लिखिए।
4. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कथक की विकास यात्रा पर टिप्पणी लिखिए।
5. कथक शब्द का तात्पर्य समझाते हुए इसमें प्रयुक्त होने वाली गीत शैलियों व वाद्यों के नाम लिखिए।
6. लखनऊ घराने पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. जयपुर घराने की प्रमुख विशेषताओं को समझाइये।
8. जयपुर व लखनऊ घराने के प्रख्यात कलाकारों के नाम लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. कथक नृत्य की एतिहासिक विकास यात्रा को समझाइये।
2. जयपुर व लखनऊ घराने के अंतर को विस्तार से समझाइये।

अभ्यास बिन्दु

1. दोनों घरानों की प्रस्तुति देखकर तुलनात्मक अध्ययन को समझना।
2. दोनों घराने के इतिहास का अध्ययन कर तुलनात्मक परिचर्चा करें।